P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4 (Part-1) May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

शिक्षा का वर्तमान भारतीय समाज में विवाहित महिलाओं की परिवार में भूमिका एवं सामाजिक स्थिति पर प्रभाव का अध्ययन

सारिका गर्ग
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
राइज मैक्स कॉलेज ऑफ एजुकेशन, फरीदाबाद,
हरियाणा, भारत

सारांश

समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है महिलाए वंश का सजृन करती है, बालक को संस्कार देती है और बालक का प्रथम गुरू होने के नाते उसे शिक्षा के मार्ग पर अग्रसर करती है। विवाहित महिलाओं का दृष्टिकोण विभिन्न समस्याओं तथा क्षेत्रों के प्रति जितना स्पष्ट परिपक्व एवं अनुकूल होता है कोई परिवार समाज तथा राष्ट्र उतना ही मजबूती के साथ विकसित होता है। अतः विवाहित महिलाओं का शिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है। ऐसा माना जाता है कि शिक्षित विवाहित महिलाए परिवार का पालन पोषण भली भांति करती है उसे संगठित रखती है और पारिवारिक सामाजिक उत्तरदायित्वों का भली भांति निर्वहन करते हुये भावी पीढ़ी को उचित दिशा एवं संस्कार प्रदान करती है। किन्तु विगत कुछ समय से भारतीय समाज में पारिवरिक विखण्डन तथा परिवार में महिलाओं की अंसतुष्टि बढ़ी है। साथ ही शिक्षित महिलाओं में आधुनिकता के नाम पर अत्याधिक एवं उदारता ने भी अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। अतः यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि शिक्षा का विवाहित महिलाओं पर क्या प्रभाव पड़ा है अतः प्रस्तुत शोध–अध्ययन में शिक्षा का वर्तमान भारतीय समाज में विवाहित महिलाओं की शिक्षा एवं परिवार में भूमिका एवं सामाजिक स्थिति पर प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है। इसके लिये स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है, एवं प्रतिशत विशेषण तथा कई वर्ग परीक्षण के द्वारा निष्कर्ष प्राप्त किये गये है।

मुख्य शब्द : शिक्षा, विवाहित महिलायें, शिक्षित एवं अशिक्षित परिवार, में भूमिका, सामाजिक स्थिति।

प्रस्तावना

महिला किसी परिवार समाज और राष्ट्र की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव व्यवस्था की संरचनात्मक एवं क्रियात्मक इकाईयो का एक महत्वपूर्ण अवयव है। महिलाओं के उचित विकास के अभाव में किसी भी परिवार समाज अथवा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास की योजना अधूरी और अव्यावहारिक है। महिलाएं विकास के सभी क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के सक्षम है, बशर्ते कि उन्हे अवसर दिये जाये। जिस समाज तथा राष्ट्र ने इनकी क्षमताओं को पहचाना है और अपने विकास की प्रक्रिया में इसका योगदान लिया है वह समाज अथवा राष्ट्र आज विकास की ऊँचाईयों को छू रहा है। इसके विपरीत जिस समाज अथवा राष्ट्र ने महिलाओं की क्षमताओ को नजरअंदाज किया है तथा अपनी विकास नीतियों का निर्धारण लिंग भेद के आधार पर किया है वह विकास के क्षितिज पर अभी भी लड़खड़ा रहा है।

उन्नीसवीं शताब्दी में महिलाओं की स्थिति आज से सर्वथा भिन्न थी जबकि वे अशिक्षित हुआ करती थी। वे पूर्णतया पुरूषों के अधीन थी, उन्हें आजीवन पिता पति एवं पुत्र की संरक्षकता में निवास करना होता था। किसी भी क्षेत्र में उन्हें पुरूषो के समान अधिकार प्राप्त नहीं थे। उनके लिये शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं था। उन्हें अपना सम्पूर्ण जीवन कूप–मंडूक की भांति परिवार में रहकर घर के कार्यो एवं पारिवारिक सदस्यों की सेवा में ही अर्पण कर देना होता था।

समाज सुधारकों द्वारा महिलाओं की इस स्थिति में परिवर्तन लाने के प्रयास किये गये और इसके विरूद्ध सामाजिक व वैयक्तिक स्वर पर अनेक आंदोलन प्रारम्भ हुये जिनमें से प्रमुख महिलाओं को शिक्षित किया जाना था। शिक्षा के कारण महिलाओं की स्थिति व दृष्टिकोण में अनेक परिवर्तन आ चुके

है। शिक्षा के कारण महिलाओं को अपने व्यक्तित्व का सर्वतोमुख विकास करने का अवसर मिला है। महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त कर रही है। इन परिस्थितियों के प्रादुर्भाव से स्त्रियों में जागरूकता का समावेश हुआ है।

शिक्षा के फलस्वरूप महिलाओं की पारिवार में भूमिका तथा सामाजिक स्थिति में विशेष रूप से परिवर्तन आये है जिनका अध्ययन प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत किया गया है।

साहित्यावलोकन

2015 में मुरलीधरन ने विवाहित कामकाजी महिलाओं के बीच पारिवारिक समायोजन पर एक शोध अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन में उन्होंने 125 का न्यादर्श लिया तथा यह शोध अध्ययन कोयम्बटूर में किया गया। जिसमे उन्होंने डॉ. विश्व विजया की (Family Adjustment Inventory) का प्रयोग किया। इसके साथ परिकल्पना के परीक्षण के लिए काई वर्ग का प्रयोग किया। जिसमे उन्होंने पाया की ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली कार्यरत महिलाओं को परिवार में समायोजन करने में ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

शिक्षा एवं परिवार में भूमिका

सम्पूर्ण सामाजिक ढांचे में परिवार का स्थान केन्द्रीय है। जिस प्रकार किसी भी वस्तु अथवा स्थान में केन्द्रीय भाग का स्थान महत्वपूर्ण होता है, उसी प्रकार समाज में परिवार का स्थान केन्द्रीय स्थान की भांति महत्वपूर्ण है। परिवार तभी तक चलता है जब तक कि उसके सदस्य पारस्परिक भूमिकाओ से संतुष्ट रहते है। परिवार बना रहे और सही सलामत चलता रहे इसके लिये महिलाओं की पारिवारिक संतुष्टि अनिवार्य है, क्योंकि परिवार में महिलाओं की कई भूमिकाये होती है। वस्तुतः परिवार महिलाओं से ही बनता है। महिलाओं की पारिवारिक संतुष्टि पर उनके शैक्षिक स्तर का गहरा प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा और सामाजिक स्थिति

सामाजिक स्थिति के अन्तर्गत सामाजिक सम्बन्धो का क्षेत्र सामाजिक जीवन में योगदान सामाजिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण सामाजिक समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण को सम्मिलित किया जाता है। क्योंकि सामाजिक परिवर्तन प्रत्येक समाज में क्रियाशील होने वाली एक अनिवार्य एवं स्वाभाविक प्रक्रिया है इस प्रकार के सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव समाज के समस्त पक्षों पर पड़ता है जिससे समाज की समस्त इकाइयों में कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य आता है। वर्तमान समय में समानता वादी दृष्टिकोण एवं महिला शिक्षा के कारण महिलाओं की परम्परागत स्थिति में पर्याप्त परिवर्तन एवं सुधार किये गये है। आधुनिक शिक्षित महिलाये पहले की भांति समाज एवं परिवार पर न तो आर्थिक रूप से बोझ बनकर रहना चाहती है और न ही वे उनके अत्याचारो को मूक होकर सहन करती है। बल्कि वे सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के साथ कार्य करती है तथा अपने अस्तित्व व्यक्तित्व के विकास के एवं अधिकारों के प्रति सचेत एवं जागरूक रहती है। इसके कारण, महिलाओं की सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक स्थितियों में परिवर्तन हुआ है। महिलाओं की सामाजिक स्थिति में निम्नलिखित को सम्मिलित किया जाता है–

सामाजिक सम्बन्धों के क्षेत्र

सामाजिक सम्बन्धो के क्षेत्र से तात्पर्य है कि परिवारो में महिलाओं के सम्बन्घ कहाँ तक सीमित है? परम्परागत रूप में महिलाओं को कार्यक्षेत्र एवं सामाजिक सम्बन्धो का क्षेत्र परिवार तथा रिश्तेदारो तक ही सीमित होता था क्योंकि महिलाओं को परिवार तथा समाज में दृष्टिकोण निम्न था। वे पुरूषों के आधीन थी आधुनिक युग में अधिकांश महिलाए शिक्षित होकर आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करती है जिससे उनके सामाजिक सम्बन्धों का दायरा बढ़ता है।

सामाजिक जीवन में योगदान

शिक्षा के प्रभाव के फलस्वरूप आज महिलाये अनेक समाज सेवी संस्थाओ समाज कल्याण सम्बन्धी कार्यक्रमों में भाग लेकर अपनी भूमिका निभा रही है। आज वे शिक्षा, पुलिस, मनोंरजन, चिकित्सा, राजनीति, दूरसंचार आदि महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कार्यरत है।

सामाजिक समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण

प्रत्येक समाज में कुछ न कुछ सामाजिक समस्याये अवश्य पायी जाती है जो व्यक्ति समाज के विकास एवं प्रगति में बाधक होती है। इन्ही सामाजिक समस्याओ में महिलाओं से सम्बन्धित अनके समस्याये है, जिनके कारण महिला जाति के शोषण को बल मिला है। लेकिन परम्परागत रूप में महिलाए इस प्रकार की सामाजिक समस्याओं को कम करने में बिल्कुल असमर्थ थी। वे पूर्णतया इन समस्याओं के जाल में फंसी हुई थी। महिलाए मूक होकर इस प्रकार के अत्याचारों एवं अन्धविश्वासो को सहन करती रहती थी। शिक्षा ने महिलाओं को जागरूक बनाया है।

समस्या कथन

''शिक्षा का वर्तमान भारतीय समाज में विवाहित महिलाओं की परिवार में भूमिका एवं सामाजिक स्थिति पर प्रभाव का अध्ययन।''

अध्ययन के उद्देश्य

1. विवाहित महिलाओं की परिवार में भूमिका पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. विवाहित महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

1. विवाहित महिलाओं की परिवार में भूमिका पर शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. विवाहित महिलाओं के सामाजिक क्षेत्र की व्यापकता पर शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. सामाजिक समस्याओ के प्रति विवाहित महिलाओं के दृष्टिकोण पर शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध प्रबिधि

प्रस्तुत अनुसंधान सर्वेक्षण पर आधारित विश्लेषणात्मक अध्ययन है। जिसके अन्तर्गत इस तथ्य का निर्वचन किया गया है कि विवाहित महिलाओं की पारिवारिक संतुष्टि तथा सामाजिक स्थिति पर शिक्षा का क्या प्रभाव पड़ता है। सर्वेक्षण से प्राप्त समंको का उचित आधार पर वर्गीकरण एवं सारणीयन करने के पश्चात्

प्रतिशत तथा काई वर्ग जाँच द्वारा विश्लेषणात्मक दृष्टिपात किया गया है।

न्यादर्श

न्यादर्श के लिये दैव चयन विधि का प्रयोग किया है। 150 शिक्षित महिलाये तथा 150 अशिक्षित महिलाये न्यादर्श में सम्मिलित है। जो कि शाहजहाँपुर जनपद से लिये गये है।

स्वतन्त्र चर

शिक्षा स्वतंत्र चर के रूप में प्रयोग की गई है।

आश्रित चर

विवाहित महिलाओं की परिवार में भूमिका तथा सामाजिक स्थिति आश्रित चर के रूप में प्रयोग की गई है।

उपकरण

शोधकर्ती द्वारा स्वर्निमित मापनी का प्रयोग किया गया है।

संमको का विश्लेषण एवं निर्वचन–

परिकल्पना

क्रं सख्या	शिक्षा और पारिवारिक संतुष्टि	महिला की संख्या		अन्तर	काई वर्ग
		अवलोकित	प्रत्याशित		
1	शिक्षित – संतुष्ट	117	128.5	–11.5	1.029
2	अशिक्षित – संतुष्ट	140	128.5	11.5	1.029
3	शिक्षित – असंतुष्ट	33	21.5	11.5	6.151
4	अशिक्षित –असंतुष्ट	10	21.5	–11.5	6.151
	योग	300	300	0	14.360

सार्थकता स्तर – 5%

स्वत्र्यन्त्राशं – 1

काई वर्ग का सारणी मूल्य – 3.84

काई वर्ग का परिगणित मूल्य – 14.36

निर्वचन – 14.36>3.84

शून्य परिकल्पना – अस्वीकृत

अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षित महिलाए परिवार में अपनी भूमिका व स्थिति से पूर्ण संतुष्ट

विवाहित महिलाओं की पारिवार में भूमिका पर शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसके अन्तर्गत शोधकर्ती का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि जो महिलाये शिक्षित है तथा जो महिलाये अशिक्षित है वे, परिवार में अपनी भूमिका तथा स्थिति से कहाँ तक संतुष्ट है। इसका संख्यात्मक विवरण निम्न है–

क्र संख्या	पारिवारिक संतुष्टि	शिक्षित महिला		अशिक्षित महिला	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	संतुष्ट है	117	78.00	140	93.33
2	संतुष्ट नहीं है	33	22.00	10	6.67
	योग	150	100.00	150	100.00

इस प्रकार स्पष्ट है कि अशिक्षित महिलाओं में शिक्षित महिलाओं की अपेक्षा पारिवारिक संतुष्टि का स्तर ऊँचा है। शिक्षा को स्वास्थ्य घर और पारिवारिक संतुष्टि को आश्रित घर मानकर कोई वर्ग जाँच की गई है।

नहीं है उन्हें लगता है कि उन्हे अधिक स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये तथा उनको परिवार में अपनी सक्रियता तथा हस्तक्षेप बढ़ाने के अधिक अवसर मिलने चाहिये।

परिकल्पना– 2

''विवाहित महिलाओं के सामाजिक क्षेत्र की व्यापकता पर शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।''

क्रं सं	सामाजिक सम्बन्धों का क्षेत्र	शिक्षित महिलायें		अशिक्षित महिलाएं	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	व्यापक है	127	84.67	48	32.00
2	सीमित है	23	15.33	102	68.00
	योग	150	100.00	150	100.00

अतः स्पष्ट है कि 150 शिक्षित महिलाओं में से 127 अर्थात् 84.67 प्रतिशत महिलाओं के सामाजिक सम्बन्ध व्यापक है, उनकी रूचि गृहकार्यो के अतिरिक्त सामाजिक जीवन के दूसरे क्षेत्रों में भी है, वे साहित्य, संगीत, कला, लेखन, राजनीति आदि में भाग लेकर अपने सामाजिक सम्बन्धो के क्षेत्र को व्यापक बनाती है।

क्रं संख्या	शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र	महिला की संख्या		अन्तर	काई वर्ग
		अवलोकित	प्रत्याशित		
1	शिक्षित – व्यापक	127	87.5%	39.5	17.83
2	अशिक्षित –व्यापक	48	87.5%	–39.5	17.83
3	शिक्षित – सीमित	23	62.5%	–39.5	24.96
4	अशिक्षित –सीमित	102	62.5%	39.5	24.96
	योग	300	300	0	85.58

जबकि अशिक्षित महिलाओं में से केवल 48 अर्थात् 32 प्रतिशत महिलाए ऐसी है जिनके सामाजिक सम्बन्ध व्यापक है जबकि 102 अर्थात् 68 प्रतिशत तक ही सीमित है। शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं के सामाजिक क्षेत्र के दायरे की परिकल्पना का परीक्षण काई वर्ग जाँच द्वारा किया गया है जो निम्न है ।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4 (Part-1) May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

सार्थकता स्तर – 5
स्वत्रयन्त्राशं – 1
काई वर्ग सारणी मूल्य – 3.84
काई वर्ग का परिगणित मूल्य 85.58
निर्वचन – 85.58>3.84
शून्य परिकल्पना – अस्वीकृत

स्पष्ट है कि शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई है। विवाहित महिलाओं के सामाजिक क्षेत्र की व्यापकता पर शिक्षा का प्रभाव पड़ता है। शिक्षित महिलाओं का सामाजिक क्षेत्र अधिक व्यापक होता है।

परिकल्पना – 3

''सामाजिक समस्याओं के प्रति विवाहित महिलाओं के दृष्टिकोण पर शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।''

क्र. संख्या	सामाजिक समस्याओ पर विचार करती है।	शिक्षित महिला		अशिक्षित महिला	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	करती है	147	98.00	133	88.67
2	नहीं करती है	03	2.00	17	11.33
	योग	150	100.00	150	100.00

147 अर्थात् 98.00 प्रतिशित शिक्षित महिलायें ऐसी है जो सामाजिक समस्याओं पर विचार करती हे तथा ऐसी महिलाओं की संख्या 03 है जो कहती है कि उनका सामाजिक समस्याओं के प्रति कोई दृष्टिकोण नहीं है। शोधकर्ता ने साक्षात्कार के माध्यम से शिक्षित से दहेज प्रथा, बालिका विवाह, बलिकाओं को न पढ़ाना आदि समस्याओ के बारे में जानकारी ली तो पाया कि शिक्षित महिलाये इस सम्बन्ध में जागरूक है। दूसरी ओर अशिक्षित महिलाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि कुल 150में से 133 अर्थात् 88.67 प्रतिशत अशिक्षित महिलाये आ समाज में उत्पन्न समस्याओं पर विचार करती है तथा 17 अर्थात् 11.33 प्रतिशत कोई विचार नहीं करती है।

इस सम्बन्ध में जो परिकल्पना स्थापित की गई उस का परीक्षण काई वर्ग द्वारा इस प्रकार किया गया है–

क्रं सं	शिक्षा और सामाजिक समस्याओं के प्रति चिन्तन	महिला की संख्या		अन्तर	काई वर्ग
		अवलोकित	प्रत्याशित		
1	शिक्षित – चिन्तन करना	147	140	7	0.35
2	अशिक्षित –चिन्तन करना	133	140	–7	0.35
3	शिक्षित –सीमित न चिन्तन करना	03	10	–7	4.90
4	अशिक्षित –सीमित न चिन्तन करना	17	10	7	4.90
	योग	300		0	10.50

सार्थकता स्तर – 5 स्वत्रयन्त्राशं – 1काई वर्ग सारणी मूल्य – 3.84 काई वर्ग का परिगणित मूल्य – 10.50 निर्वचन – 10. 50>3.84

शून्य परिकल्पना

अस्वीकृत

इस प्रकार स्पष्ट है कि सामाजिक समस्याओ पर 147 शिक्षित महिलाएँ चिन्तन करती है। इनकी वास्तविक संख्या प्रत्याशित संख्या से 7 अधिक है। परिकलित काई वर्ग मूल्य 10.50 है जो सारणी मूल्य से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त हुई है वास्तव में सामाजिक समस्याओ के प्रति दृष्टिकोण पर महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन की उपयोगिता

1. प्रस्तुत अध्ययन से शिक्षित व अशिक्षित महिलाओं के विभिन्न दृष्टिकोण का प्रकृतिकरण हुआ है तथा उनकी अनेक समस्याये व कुढांए सामने आयी है जिन्हे शिक्षा एवं शिक्षाप्रद कार्यक्रमों द्वारा दूर किया जा सकता है।
2. इस शोध के माध्यम से शिक्षित महिलाओं को शिक्षा की उपयोगिता का एहसास हुआ है जिससे वे स्वयं साक्षर होने के लिये प्रेरित हुई है तथा अपने बच्चो को उच्च शिक्षित करने के लिये प्रोत्साहित हुई है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

1. विवाहित महिलाओं की पारिवार में भूमिका पर शिक्षा का विपरीत प्रभाव पड़ता है। शिक्षित महिलाओं में अपने परिवार से संतुष्टि अशिक्षित महिलाओं की अपेक्षा कम होती है।
2. विवाहित महिलाओं की सामाजिकता और सामाजिक क्षेत्र में व्यापकता व सक्रियता पर शिक्षा का अनुकूल प्रभाव पड़ता है शिक्षित महिलाओं का सामाजिक क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत होता है।
3. सामाजिक समस्याओं के प्रति विवाहित महिलाओं के दृष्टिकोण पर शिक्षा का प्रभाव पड़ता है। शिक्षित महिलाये सामाजिक समस्याओ के प्रति अपेक्षाकृत अधिक चिंतन करती है।

सुझाव

माध्यमिक स्तर पर परिवार शिक्षा के नाम एक पाठ्यक्रम सभी वर्गो के छात्र –छात्राओं हेतु अनिवार्य रूप से लागू किया जाना चाहिये जिसकी विषय सामग्री समाजशास्त्र, मनोविज्ञान तथा गृहविज्ञान को मिलाकर तैयार की जाये और जो भारतीय संस्कृति नैतिक मूल्यों सामाजिक मूल्यों तथा धार्मिक संस्कारो पर आधारित हो ताकि शिक्षा से आधुनिकता के नाम पर उचित परम्पराओं की छाया न हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

त्यागी एवं पाठक – शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

सत्यकेत विद्यालेकर – प्राचीन काल का धार्मिक सामाजिक और आर्थिक जीवन

Agarwal M, A study of the Impact of Education on Social and cultural modernization of Hindu and Muslim women, Ph.D, Edu, Kur, Univ. 1980

सारिका, विवाहित महिलाओं की पारिवारिक संतुष्टि सामाजिक स्थिति धार्मिक संस्कारों तथा मनोरंजन दृष्टिकोणों पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन Ph.D Edu. MJ.P University Bareilly 2010.

Kakati, Kunja Kusum, Socio economic status of educated working women of kamrep district. A study of its impact on society. Ph.D Edu. Gaurati University 1990.

Garrett H.E., Satistics in Psychology and education, Allied pictic Pvt. Ltd. Bombay Vth education 1988

Kail, H.K. Elements of statistics in social science, vinod pustak Mandir Agra 1988.

Channa, Karuna, Women's work education and family strategies in the context of social change and mobility independent study, J.N.U.